अध्याय 37

कनान में यूसुफ़

यूसुफ़ की कहानी, अध्याय 37 से 50 तक पाया जाता है जो इस पुस्तक के इस अंश का अंतिम मुख्य भाग है। पूरे वृतांत में परमेश्वर के उपाय का प्रमाण मिलता है, जैसे कि यूसुफ़ का मिस्र को जाना, पोतीफर के घर में उसका सेवा करना, उसका बंदीगृह में डाला जाना और बाद में फ़िरौन के बाद मिस्र में दूसरा सबसे बड़ा अधिकारी बनना। याकूब और उसके परिवार को मिस्र जाने का दिशा निर्देश हुआ जहाँ यह परिवार एक बड़े इस्राएल राष्ट्र में बदल गया। अंततः परमेश्वर ने उन्हें बचाया कि वे प्रतिज्ञा की हुई देश में रहें जिससे कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को कुलपतियों अब्राहम, इसहाक और याकूब के द्वारा पूरा कर सके।

यूसुफ़ का स्वप्न (37:1-11)

[1]याकूब तो कनान देश में रहता था, जहां उसका पिता परदेशी हो कर रहा था। [2]और याकूब के वंश का वृत्तान्त यह है: कि यूसुफ़ सतरह वर्ष का हो कर भाइयों के संग भेड़-बकरियों को चराता था; और वह लड़का अपने पिता की पत्नी बिल्हा, और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था: और उनकी बुराईयों का समाचार अपने पिता के पास पहुँचाया करता था: [3]और इस्राएल अपने सब पुत्रों से बढ़के यूसुफ़ से प्रीति रखता था, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र था और उसने उसके लिये रंग बिरंगा अंगरखा बनवाया। [4]सो जब उसके भाईयों ने देखा, कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उससे बैर करने लगे और उसके साथ ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे। [5]और यूसुफ़ ने एक स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका वर्णन किया, तब वे उससे और भी द्वेष करने लगे। [6]और उसने उन से कहा, जो स्वप्न मैं ने देखा है, सो सुनो: [7]हम लोग खेत में पूले बान्ध रहे हैं, और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठ कर सीधा खड़ा हो गया; तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत किया। [8]तब उसके भाइयों ने उससे कहा, क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा? वा सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा? सो वे उसके स्वप्नों और उसकी बातों के कारण उससे और भी अधिक बैर करने लगे। [9]फिर उसने एक और स्वप्न देखा और अपने भाइयों से उसका भी यों वर्णन किया, कि सुनो, मैं ने एक और स्वप्न देखा है, कि सूर्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत कर रहे हैं। [10]यह स्वप्न उसने अपने पिता, और भाइयों से वर्णन किया, तब उसके

पिता ने उसको दपट के कहा, यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जा कर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत करेंगे? 11उसके भाई तो उससे डाह करते थे; पर उसके पिता ने उसके उस वचन को स्मरण रखा।

आयत 1. यूसुफ़ की कहानी प्रारंभ करने से पहले, लेखक ने यह कहकर मंच तैयार किया कि **याकूब तो कनान देश में रहता था, जहाँ उसका पिता परदेशी हो कर रहा था**। "रहना" के लिए इब्रानी क्रिया יָשַׁב *(याशब)* है जिसका अर्थ "बसना" (देखें NRSV) है; जो "डेरा डालना/मुसाफिर" גּוּר *(गूर)* या "परदेशी" के विपरीत है (देखें NRSV)। यह अनुच्छेद यह दर्शाता है कि इसहाक के दोनों पुत्रों ने उससे अलग निर्णय लिया। याकूब, कनान में बस गया, जहाँ परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग बसें (12:1, 5; 13:14, 15; 15:7, 18; 17:8; 24:7; 26:2-4; 28:4, 13-15; 31:3, 13; 35:12)। एसाव ने अपने पत्नियों, बच्चों, दासों और समस्त सम्पत्ति के साथ कनान छोड़ दिया। वे स्थाई रूप से "सेईर नाम पहाड़ी देश" जो एदोम भी कहलाता है में रहने लगे (36:6-8)।

उत्पत्ति का अंतिम खण्ड (अध्याय 37-50) कनान देश के संदर्भों को कोष्ठकों में दिया गया है। खण्ड के आरम्भ में याकूब कनान में बस गया (37:1)। खण्ड के अंत के निकट, कुलपिता याकूब के मरने के बाद, उसके शरीर को मिस्र से वापस कनान लाया गया और वहाँ दफनाया गया (50:12, 13)। इसके अलावा, जब याकूब ने मृत्यु को सामने पाया, तो उसने इस बात पर जोर दिया कि यहोवा उन्हें उस देश से प्रतिज्ञा के देश में ले जाएगा, और उसने जोर देकर कहा कि उसे वहाँ दफनाए जाए (50:24-26)।

आयत 2. इस पुस्तक का अंतिम भाग **याकूब के वंश** [תּוֹלְדוֹת, *टोलडोथ*] **का वृत्तान्त यह है**, करके परिचित करता है। यह उत्पत्ति में दशवाँ और अंतिम *टोलडोथ* भाग है (2:4; 5:1; 6:9; 10:1; 11:10, 27; 25:12, 19; 36:1; 37:2)। जबकि यह शब्द कभी कभी वंशावली को परिचित कराता है, लेकिन यह शब्द किसी व्यक्ति के पूर्वजों और उसके वंशों का भी व्याख्यान करता है। पूर्ववर्ती विवरणिका यहाँ पर लागू होता है: यह **याकूब** से संबंधित है, लेकिन वह यूसुफ़ का पिता था, जो यहाँ से आगे इस कहानी का प्रमुख पात्र है। याकूब का संदर्भ, यहूदा और तामार की कहानी को महत्व देता है (अध्याय 38), इसके साथ ही यह यहूदा, रूबेन, शमौन, बिन्यामीन और याकूब के अन्य पुत्रों का संदर्भ भी देता है। तब अध्याय 46 से 49 तक याकूब के कार्यों का विस्तृत वर्णन किया गया है। उत्पत्ति के शेष भागों में मुख्य आकर्षण यूसुफ़ है जो दुलारा पुत्र से भरोसेमंद दास बना, उसके बाद वह एक आदर्श बंदी और अंततः मिस्र का वज़ीर[1] (अधिकारी के रूप में दूसरा स्थान) बना (41:37-45)।

जब यह वृतांत प्रारंभ होता है तो हारान में उसकी माता राहेल से उसके पैदा होने के सत्रह वर्ष बीत चुका था (30:22-44)। कनान में वह अपने भाइयों [लिआ के छः पुत्र] के साथ, जब वह जवान ही था, भेड़ बकरियां चराता था।

उसके चार अन्य भाई, बिल्हा और जिल्पा के पुत्रों (उसके पिता के गौण पत्नियां) भी उसके साथ थे। किसी कारणवश यूसुफ़ अपने भाइयों के बुरे समाचार अपने पिता को बताता था। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या यह बुरे समाचार सत्य या असत्य थी। "समाचार" के लिए इब्रानी शब्द דִּבָּה *(दिब्बाह)* प्रयोग किया गया है जिसका नकारात्मक अर्थ "किस्सा" है; जो "फुसफुसाहट" (यिर्म. 20:10) और "झूठी निंदा" (भजन 31:13; नीति. 10:18) से संबंधित है। यहाँ इसको "बुरा" या "दुष्टता" (רַע, *रा)* विशेषण से विशेषित किया गया है, जैसा गिनती 14:37[2] में पाया जाता है, तो यूसुफ़ ने अपने भाइयों की बुराई की होगी। फिर भी इसका अर्थ यह हो सकता है कि उसने अपने भाइयों के बुरे कार्यों का समाचार अपने पिता को दी होगी (देखें नीति. 25:10; यहेज. 36:3)।[3] क्या यूसुफ़ का कार्य अपने भाइयों का भेद लेना था और उसे अपने पिता को बताना था? बड़े भाइयों ने शकेम के लोगों के साथ क्या किया है (34:18-31), तो इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि याकूब उन पर भरोसा नहीं करते थे। जब यूसुफ़ "बुरे समाचार" याकूब को बताता था तो उसके प्रति उसके भाइयों का घृणा बढ़ गया था।

आयत 3. याकूब का यूसुफ़ के प्रति अधिक दुलार दिखाना ने भी उसके भाइयों का उसके प्रति घृणा पैदा की थी। लेखक ने यह स्पष्ट किया कि **इस्राएल अपने सब पुत्रों से बढ़के यूसुफ़ से प्रीति रखता था**। क्योंकि वह याकूब की प्रिय पत्नी राहेल का बेटा तथा उसके बुढ़ापे का पुत्र था। यह वाक्यांश थोड़ा अटपटा सा लगता है क्योंकि हारान में यूसुफ़ के पैदा होने (30:22-24) और कनान में बिन्यामीन के पैदा होने (35:16-18) के बीच पर्याप्त समय बीत चुका था। प्रायोगिक रूप से देखा जाए तो बिन्यामीन, याकूब के बुढ़ापे का पुत्र था क्योंकि वह उसका अंतिम पुत्र था; और बिन्यामीन के पैदा होने के साथ ही राहेल की मृत्यु हो गई थी और याकूब दुःख भरी यादों के साथ अब अपना जीवन बीता रहा था।

यूसुफ़ के प्रति अपनी दुलार प्रगट करने के लिए याकूब ने उसके लिए **रंग बिरंगा अंगरखा** כְּתֹנֶת פַּסִּים *(केथोनेथ पासीम)* बनवाया था जो उसे अपने भाइयों से भिन्न करता था। इस वस्त्र की वास्तविक रंग रूप विवादास्पद है क्योंकि इसका इब्रानी शब्द का अर्थ अनिश्चित है। प्राचीन विद्वानों के समान समकालीन विद्वान भी इस वस्त्र के वर्णन में बंटे हुए हैं। NASB और NJPSV अनुवाद 250 ई.पू. के LXX अनुवाद पर आधारित है जो इस वस्त्र को बहुरंगी वस्त्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो कालांतर में राजा दाऊद की पुत्रियां पहना करतीं थीं (2 शमूएल 13:18, 19)। जबकि, NIV इसको "आभूषणों से सजे हुए" वस्त्र के रूप में वर्णन करता है और NRSV इसे "बाज़ू वाले लंबे अंगरखा" करके वर्णन करता है (देखें NEB)। ये सारे अनुवाद इस वस्त्र के रंग के बारे में कुछ नहीं बताते हैं। यूसुफ़ के वस्त्र का आकार व रंग कैसा भी क्यों न हो,[4] यह निश्चय ही उच्च वर्गीय लोगों का वस्त्र था जो साधारण कामकाजी लोगों के लिए नहीं बना था। इस वस्त्र ने उसे बाप के लाडला के रूप में अपने भाइयों से भिन्न किया और उसके प्रति उनकी दुश्मनी बढ़ गई।

आयत 4. याकूब का पालन पोषण उस घर में हुआ जहाँ उसके और उसके भाई एसाव के मध्य स्पष्ट भेदभाव रखा गया था। याकूब को यह स्मरण रखना चाहिए था कि इस प्रकार का भेदभाव परिवार के लिए कितना घातक है; परंतु इसके विपरीत, उसने एक ऐसे परिवार का निर्माण किया जो उससे भी अधिक घातक था जहाँ उसका पालन पोषण हुआ था। उसकी पत्नियां, राहेल और लिया के मध्य याकूब के प्रति प्रेम के लिए ईर्ष्या और झगड़ा था। इस प्रकार की विनाशक प्रवृति उनके बच्चों तथा उसके रखैल के बच्चों पर भी आ गई थी। जब **यूसुफ़ के भाइयों ने देखा कि उनका पिता उससे उसके अन्य भाइयों से अधिक प्रेम करता है** तो उसके प्रति उनका घृणा बढ़ गई। उसको अप्रिय जानने से उनके मन में उसके प्रति अपशब्द ही उत्पन्न किए। इस बात ने याकूब के परिवार में तूफान खड़ा किया और वे एक दूसरे का सम्मान नहीं करते थे; याकूब के अन्य पुत्र उससे **ठीक तरह से बात भी नहीं करते थे**। "ठीक तरह" इब्रानी शब्द שָׁלוֹם *(शालोम)* का अनुवाद है जिसका अर्थ "शांतिपूर्ण तरीका" है।

आयत 5. इस कहानी की अत्यंत महत्वपूर्ण घड़ी तब आई जब **यूसुफ़ ने एक स्वप्न देखा**। इस घटना से पूर्व परमेश्वर ने उत्पत्ति में स्वप्न का प्रयोग ईश्वरीय संदेश के आदान प्रदान और भविष्यवाणी के लिए किया था परंतु बाइबल का यह प्रथम स्वप्न है जहाँ परमेश्वर ने अपने आपको किसी व्यक्ति विशेष पर प्रकट नहीं किया (तुलना करें 20:3-7; 28:12-15; 31:11-13, 24)।

जब यूसुफ़ ने स्वप्न देखा तो उसने **यह अपने भाइयों को बताया**। इस स्वप्न को अपने भाइयों को बताने के उद्देश्य के बारे में मूल पाठ कुछ भी उल्लेख नहीं करता है। कुछ लोगों का मानना है कि याकूब का प्रिय पुत्र होने के नाते, यूसुफ़ अभिमानी स्वभाव का था। फिर भी यह हो सकता है कि उसने भोलेपन के कारण ऐसा बोला होगा। उसका उद्देश्य कुछ भी क्यों न हो, उसके भाइयों ने उसका स्वप्न सुनकर उससे **और अधिक घृणा किया**। इब्रानी भाषा में "और अधिक" के लिए יָסַף *(यासाप)* क्रिया प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ "अधिक करना" होता है।

आयत 6. यूसुफ़ ने अपने भाइयों का ध्यान, **जो स्वप्न मैंने दिखा है, उसे सुनो** कहकर अपनी ओर खींचा। क्योंकि प्राचीन संसार में स्वप्न, भविष्य के संकेतक के रूप में समझा जाता था तो लोग इस पर अधिक ध्यान दिया करते थे।

आयत 7. तब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया, **हम लोग खेत में पूले बान्ध रहे हैं, और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठ कर सीधा खड़ा हो गया; तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत किया।** इस स्वप्न को बताकर, जो स्पष्ट रूप से अपने भाइयों पर यूसुफ़ की श्रेष्ठता को दर्शाता है, यूसुफ़ अपने ही पतन का द्वार खोल रहा था। हालांकि, परमेश्वर की यूसुफ़ के लिए एक योजना थी जो कई वर्षों के बाद मिस्र में पूरी होने वाली थी, जब उसके भाई वास्तव में उसके चरणों पर अपने सिर झुकाने वाले थे (42:6; 43:26, 28; 44:14; 50:18)। फिर भी, न तो उसने और न ही उसके भाइयों ने इस स्वप्न के महत्व को उस समय समझा।

आयत 8. भाइयों ने इस स्वप्न के अनुवाद को इनकार किया और उन्होंने यूसुफ़, जो अपने आपको उनसे ऊँचा कर रहा था, से और भी अधिक घृणा की। **क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा?** उन्होंने पूछा, **वा सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा?** मूलपाठ यह भी दोहराता है, **सो वे उसके स्वप्नों और उसकी बातों के कारण उससे और भी अधिक बैर करने लगे** (देखें 37:5)।

आयत 9. यूसुफ़ ने एक और स्वप्न देखा। पूरी कहानी के इन विशिष्ट लक्षणों की प्रवृति दो स्वप्नों के रूप में आने की है (देखें अध्याय 40; 41)। बाद में उसने इस घटना के कारणों को समझा: "स्वप्न दो बार देखने का भेद यही है, कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा" (41:32)।

इस स्वप्न को अपने तक सीमित रखने के बजाय यूसुफ़ ने परिस्थिति को अपने भाइयों से संबंधित करके, इसे और भी अधिक बिगाड़ दिया था। उसने कहा, **कि सुनो, मैं ने एक और स्वप्न देखा है, कि सूर्य और चन्द्रमा, और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत कर रहे हैं।** स्पष्ट रूप से तारामंडल यूसुफ़ के परिवार का प्रतिनिधित्व करता है। "सूर्य" और "चंद्रमा" उसके पिता और माता के प्रतीक हैं, जबकि "ग्यारह तारे" उसके ग्यारह भाइयों (बिन्यामीन को मिलाकर) को दर्शाता है।

आयत 10. यूसुफ़ ने दूसरी बार अपना स्वप्न बताया, इस बार उसने अपने भाइयों के साथ साथ अपने पिता को भी यह स्वप्न बताया। याकूब भी उसके शब्दों से नाराज़ हुआ। उसने यूसुफ़ को यह कहकर डांटा, **यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जा कर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत करेंगे?** क्योंकि राहेल की मृत्यु हो चुकी थी (35:19) तो यहाँ यूसुफ़ की माता का संदर्भ थोड़ा चौंकाने वाला है। एक सुझाव यह है कि राहेल की रखैल बिल्हा, यूसुफ़ (और बिन्यामीन) की माँ के रूप में इस समय देखी जा सकती है। दूसरी संभावना यह है कि लिआ, याकूब की पत्नी, संभवतः इस भूमिका को निभा रही होगी।

आयत 11. जैसे कि कोई इस बात को समझ सकता है कि उसके भाई उससे डाह करते थे और इससे यह स्पष्ट है कि उसके भाई उससे बैरभाव करते थे। फिर भी उसके पिता ने ये सारी बातें अपने मन में रखीं और इस विषय पर सोचते रहे कि उसके परिवार के विषय में इस स्वप्न का तात्पर्य क्या है (देखें लूका 2:19, 51)।

यूसुफ़ का अपने भाइयों को ढूँढना (37:12-17)

[12]और उसके भाई अपने पिता की भेड़-बकरियों को चराने के लिये शकेम को गए। [13]तब इस्राएल ने यूसुफ़ से कहा, तेरे भाई तो शकेम ही में भेड़-बकरी चरा रहें होंगे, सो जा, मैं तुझे उनके पास भेजता हूं। उसने उससे कहा जो आज्ञा मैं हाज़िर हूँ। [14]उसने उससे कहा, जा, अपने भाइयों और भेड़-बकरियों का हाल

देख आ कि वे कुशल से तो हैं, फिर मेरे पास समाचार ले आ। सो उसने उसको हेब्रोन की तराई में विदा कर दिया, और वह शकेम में आया। 15और किसी मनुष्य ने उसको मैदान में इधर उधर भटकते हुए पाकर उससे पूछा, तू क्या ढूंढता है? 16उसने कहा, मैं तो अपने भाइयों को ढूंढता हूँ: कृपा कर मुझे बता, कि वे भेड़-बकरियों को कहाँ चरा रहे हैं? 17उस मनुष्य ने कहा, वे तो यहाँ से चले गए हैं: और मैं ने उन को यह कहते सुना, कि आओ, हम दोतान को चलें। सो यूसुफ़ अपने भाइयों के पास चला और उन्हें दोतान में पाया।

आयतें 12, 13. यह भाग इस सूचना के साथ प्रारंभ होता है कि यूसुफ़ के भाई **अपने पिता की भेड़-बकरियों को चराने के लिये शकेम को गए** और **इस्राएल** ने **यूसुफ़** को उनके पास भेजा। जबकि यह घटना बाइबल के सभी विद्यार्थियों को अच्छी तरह मालूम है लेकिन निम्नलिखित घटनाएं आश्चर्यचकित करने वाले प्रश्न खड़ी करतीं हैं। (1) याकूब ने यूसुफ़ को उसके भाइयों की खबर लेने के लिए क्यों भेजा, जबकि वह जानता था कि वे उससे घृणा करते हैं और उससे वे प्रेमपूर्वक बातें भी नहीं करते हैं (37:4)? (2) यूसुफ़ के भाई हेब्रोन से शकेम (लगभग पचास मील की दूरी तय करके) अपने भेड़ बकरियों को चराने के लिए क्यों गए? (3) कुछ समय पूर्व ही शकेम के लोगों को भाइयों ने मार डाला था, तो क्या यह याकूब के पुत्रों के लिए वहाँ जाना खतरा नहीं हो सकता था और विशेषकर यूसुफ़ का अकेले वहाँ जाना क्या उचित था?

इन प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर नहीं दिया जा सकता है परंतु निम्नलिखित विवरण लाभप्रद हो सकती है। (1) याकूब ने संभवतः यह नहीं सोचा होगा कि उसके बड़े पुत्र यूसुफ़ से इतनी अधिक घृणा करते हैं कि वे उसे नुकसान भी पहुँचा सकते हैं। (2) शीत ऋतु की वर्षा के उपरांत, चरवाहे चरागाह में अपने शिविर और ग्रामों के निकट रहते थे जहाँ जानवरों के लिए पर्याप्त घास हुआ करती थी। जब वहाँ घास समाप्त हो जाती थी तो उनके जानवर उन खेतों में चरते थे जहाँ कटनी हो चुकी होती थी। ग्रीष्मकाल में चरवाहे अपने जानवरों को पहाड़ी प्रदेशों में चराने के लिए ले जाते थे जहाँ पर्याप्त मात्रा में उन जानवरों के लिए घास उपलब्ध रहती थी।[5] कनान के दक्षिणी भाग में स्थित हेब्रोन, अर्ध सूखा (इस क्षेत्र में सालाना दस से बीस इंच वर्षा होती थी) स्थान था। संभवतः याकूब ने अपने पुत्रों को उत्तर की ओर बहत्तर चरागाह के तलाश में भेजा होगा जहाँ उसने हारान से लौटते समय शकेम में कुछ भूमि खरीदी थी (33:18, 19)। शकेम में जानवरों के लिए पर्याप्त घास नहीं थी, इसलिए यूसुफ़ के भाई चौदह मील और चलकर दोतान पहुँचे (37:17), जहाँ यूसुफ़ ने उन्हें ढूँढ लिया। (3) शकेम में हुए हत्याकाण्ड को अब कुछ समय बीत चुका था अतः याकूब ने सोचा होगा कि शकेम के नए निवासी उसके पुत्रों को गुनाहगारों के रूप में नहीं पहचानेंगे।

यूसुफ़ का अपने भाइयों का खबर लेने की इच्छा **मैं हाज़िर हूँ** (देखें 24:58) शब्दों से प्रकट होता है। दूसरे घटनाओं में, NASB में इस इब्रानी शब्द הִנֵּנִי *(हिन्नेनी)* का अनुवाद "मैं यहाँ हूँ" है (22:1, 7, 11; 27:1, 18; 31:11; 46:2)।

स्पष्टतया, यूसुफ़ को यह नहीं पता था कि उसके भाई उससे कितना घृणा करते हैं और उसके जीवन के लिए कितने घातक हैं। यदि उसे यह सब पता होता तो वह इस यात्रा में जाने के लिए इतना उत्सुक नहीं होता।

आयत 14. याकूब ने यूसुफ़ को यह कहकर भेजा, **जा, अपने भाइयों और भेड़-बकरियों का हाल देख आ कि वे कुशल से तो हैं, फिर मेरे पास समाचार ले आ।** किसी खतरे का आभास किए बिना, याकूब ने यूसुफ़ को अकेले ही हेब्रोन की तराई से विदा कर शकेम भेजा। यह जवान अकेले क्यों भेजा गया इसका विश्लेषण करना कठिन है, लेकिन बाइबल में इसके समतुल्य और भी कहानियाँ है। जबकि दूरी तो इतनी नहीं थी फिर भी यिशै ने दाऊद को बैतलहम से एला की घाटी में उसके बड़े भाइयों का युद्ध क्षेत्र में हाल चाल जानने और खाने पीने की वस्तुओं के साथ भेजा (1 शमूएल 17:17, 18)।

आयतें 15-17. जब यूसुफ़ घर से पचास मील की दूरी पर था और **जब वह खेतों में भटक रहा था तो उसे एक अनजान व्यक्ति मिला** (37:15)। वह बेशक निराश तथा दुःखी हो गया था क्योंकि वह अपने भाइयों से नहीं मिल पा रहा था। "भटकना" תָּעָה *(टाह)* से यह ज्ञात होता है वह मानो भटकी हुई भेड़ के समान है (देखें भजन 119:176; यशायाह 53:6)। इस व्यक्ति से आकस्मिक भेंट, यूसुफ़ का अपने प्रेमी पिता से बिछुड़ने के साथ ही उसके भाइयों के घृणित हाथों में पड़ने जैसा है। विडंबना यह है कि वह अपने भाइयों से अधिक उस अजनबी के हाथों में सुरक्षित था।

उस व्यक्ति ने यूसुफ़ **को पूछा, तू क्या ढूँढ़ता है?** (37:15)। उसने कहा, **"मै अपने भाइयों को ढूँढ रहा हूँ; कृपया मुझे बताएं कि वे जानवर कहाँ चरा रहे हैं** (37:16)। उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि इस क्षेत्र को छोड़ने से पहले उसने उन्हें यह कहते सुना कि **आओ हम दोतान को चलें** (37:17)। इस व्यक्ति का भाइयों की बातचीत को सुनना, इस कहानी में ईश्वरीय व्यवस्था की योजना है। आश्चर्यजनक रूप से यहूदी परंपरा इस व्यक्ति की पहचान एक स्वर्गदूत के रूप में करती है।[6] यह संभव है किंतु निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। इससे भी पहले अब्राहम, लूत, और याकूब की स्वर्गदूतों से भेंट हुई थी जो उन्हें मनुष्य जैसे प्रगट हुए थे (18:1-19:26; 32:24-32)।

इस सूचना को प्राप्त करने के बाद, यूसुफ़ ने चौदह मील और चलकर अपने भाइयों का पीछा किया और **उन्हें दोतान में पाया** (37:17)। यह नगर एक उपजाऊ घाटी में स्थित था जहाँ याकूब के जानवरों के लिए उत्तम चरागाह था। तेल दोतान, जिसका क्षेत्रफल पच्चीस एकड़ था, की खोज बीसवीं सदी के मध्य में की गई।[7]

भाइयों ने यूसुफ़ को पकड़वाया (37:18-28)

[18]और ज्योंही उन्होंने उसे दूर से आते देखा, तो उसके निकट आने के पहिले ही उसे मार डालने की युक्ति की। [19]और वे आपस में कहने लगे, देखो, वह स्वप्न

देखनेहारा आ रहा है। 20सो आओ, हम उसको घात करके किसी गड़हे में डाल दें और यह कह देंगे, कि कोई दुष्ट पशु उसको खा गया। फिर हम देखेंगे कि उसके स्वप्नों का क्या फल होगा। 21यह सुनके रूबेन ने उसको उनके हाथ से बचाने की मनसा से कहा, हम उसको प्राण से तो न मारें। 22फिर रूबेन ने उन से कहा, लोहू मत बहाओ, उसको जंगल के इस गड़हे में डाल दो और उस पर हाथ मत उठाओ। वह उसको उनके हाथ से छुड़ाकर पिता के पास फिर पहुँचाना चाहता था। 23सो ऐसा हुआ, कि जब यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा तब उन्हों ने उसका रंगबिरंगा अंगरखा, जिसे वह पहिने हुए था, उतार लिया। 24और यूसुफ़ को उठा कर गड़हे में डाल दिया: वह गड़हा तो सूखा था और उस में कुछ जल न था। 25तब वे रोटी खाने को बैठ गए और आँखे उठा कर क्या देखा, कि इश्माएलियों का एक दल ऊंटो पर सुगन्धद्रव्य, बलसान, और गन्धरस लादे हुए, गिलाद से मिस्र को चला जा रहा है। 26तब यहूदा ने अपने भाइयों से कहा, अपने भाई को घात करने और उसका खून छिपाने से क्या लाभ होगा? 27आओ, हम उसे इश्माएलियों के हाथ बेच डालें और अपना हाथ उस पर न उठाएं, क्योंकि वह हमारा भाई और हमारी हड्डी और मांस है, सो उसके भाइयों ने उसकी बात मान ली। तब मिद्यानी व्यापारी उधर से होकर उनके पास पहुंचे: 28सो यूसुफ़ के भाइयों ने उसको उस गड़हे में से खींच के बाहर निकाला, और इश्माएलियों के हाथ चांदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया: और वे यूसुफ़ को मिस्र में ले गए।

आयत 18. दृश्य अब यूसुफ़ के भाइयों की ओर घुमता है जिन्होंने यूसुफ़ को दूर से आते हुए देखा और उसके निकट आने से पूर्व ही उसे पहचान लिया। उसको उसके लंबे रंगबिरंगे वस्त्र पहने होने के कारण पहचानने में कोई गलती नहीं हो सकती थी। वे उसे **मार डालने की योजना बनाने लगे।**

आयतें 19, 20. उनका उनके छोटे भाई के प्रति घृणा इतनी बढ़ गई कि उन्होंने उसे मार डालने की सोची। वाद विवाद करने के बाद, उन्होंने एक दूसरे से कहा, **देखो, वह स्वप्न देखनेहारा आ रहा है! सो आओ, हम उसको घात करके किसी गड़हे में डाल दें।** इब्रानी वाक्यांश בַּעַל הַחֲלֹמוֹת *(बाल हचालोमोथ)* का शाब्दिक अनुवाद "स्वप्नों का स्वामी" है और यह किसी "स्वप्न विशेषज्ञ" को दर्शाता है।[8] भाइयों ने उसके लिए इस प्रकार का कटाक्षपूर्ण व्याख्यान प्रयोग किया होगा। यहाँ तक कि प्राचीन संसार के लोग स्वप्न को भविष्य के शगुन या अपशगुन के रूप में देखते थे। क्योंकि यूसुफ़ का स्वप्न दुःख देने वाला और डरानेवाला था, तो उसके भाइयों ने इस स्वप्न के पूरे होने से पूर्व ही इस स्वप्न देखने हारा से छुटकारा प्राप्त करना चाहा। जिन गड्ढों का यहाँ वर्णन किया गया है वह या तो झरने हैं जो या तो प्राकृतिक रूप से बने होंगे या फिर जल एकत्र करने के लिए हाथों से जानवरों के लिए जल भरने के लिए खोदा गया होगा। भाइयों ने निर्णय लिया कि इनमें से एक गहरा गड्ढा यूसुफ़ की देह को ठिकाने लगाने के लिए पर्याप्त होगा। उनकी योजना यह थी कि वे घर वापस आते और अपने पिता को बताते कि **कोई दुष्ट पशु उसको खा गया।** फिर उन्होंने कहा, **फिर**

हम देखेंगे कि उसके स्वप्नों का क्या फल होगा।

आयतें 21, 22. रूबेन ने उनकी योजना को सुना और उसे उनके हाथों से बचाया। बड़ा पुत्र होने के नाते (29:32), उसने अधिकार से बोलते हुए कहा, **हम उसको प्राण से तो न मारें** और **लहू मत बहाओ**। उसने उनको एक विकल्प दिया: **उसको जंगल** ["चरागाह भूमि"[9]] **के इस गड़हे में डाल दो और उस पर हाथ मत उठाओ** (देखें 42:22)। बाइबल अंश यूसुफ़ के प्राणों को बचाने के विषय रूबेन के उद्देश्य को प्रकट नहीं करता है। वह निश्चय ही यह जानता था कि यदि यूसुफ़ को कुछ हो जाता है तो बड़ा पुत्र होने के नाते, वह इस बात का व्यक्तिगत रूप से ज़िम्मेदार होगा। क्योंकि उसने बिल्हा अपने पिता की उपपत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने से अपने पिता को अपमानित किया था (35:22), अपने पिता की कृपा दृष्टि से तो वह पहले ही गिर चुका था। इसलिए वह अपने पिता के साथ टूटे हुए सम्बन्ध सुधारने का प्रयास कर रहा था जब उसने अपने भाइयों को कुछ अलग कार्य करने के लिए उत्साहित किया।

जब उसने "इस गड़हे" को बताया, प्रत्यक्ष रूप से उसका अर्थ उस विशेष कुंड की ओर था जो हाथों से एक बोतल की आकार में खोदा गया और जिस पर एक छोटा सा मुँह था। इस तरह के कुंडों पर प्रायः पत्थर लगाए जाते थे और उनमें पानी रखने के लिए प्लास्टर किया जाता था, और वे वास्तव में बहुत जोखिम भरे होते थे, यदि कोई व्यक्ति उसमें गिर जाए या वहाँ गिरा दिया जाए[10] तो नीचे तक रस्सा गिराकर ही उसे बचाया जा सकता था। यदि यूसुफ़ को इस तरह के गड़हें में रख दिया जाता (एक निर्जन चरागाह भूमि में), तो उसके पास इस कठिन घड़ी में बचने की कुछ आशा थी। रूबेन यूसुफ़ के पक्ष में हस्तक्षेप किया क्योंकि **उसका उद्देश्य उसे उनके हाथों से छुड़ाकर अपने पिता को सौंपना था**। उसने उस गड़हे के पास आने की योजना बनाई, कि वह यूसुफ़ को निकालेगा और वापिस हेब्रोन में ले जाएगा।

आयतें 23, 24. जब यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा, उन्होंने अपनी योजना को लागू किया और उसके साथ बुरा व्यवहार किया: उन्होंने उसका रंग बिरंगा अंगरखा जिसे वह पहना हुआ था उतार लिया जैसे किसी राजकुमार को अपमानित कर राजगद्दी से उतारा जाता है। उसके बाद बिना किसी झिझक या दया के उन्होंने उसे उस सूखे कुएँ में फेंक दिया। **कुएँ का खाली होना, सूखा बिना जल के संकेत करता है** कि या तो कनान देश सूखे को झेल रहा था या यह घटनाएँ गर्मी के मौसम के अन्त में हुई इससे पहले कि बरसात का मौसम आरम्भ होता।

आयत 25. यूसुफ़ का रंगबिरंगा अंगरखा उतारने और उसे सूख कुएँ में फेंकने के बाद, जहाँ उनकी आशा थी कि वह जल और भोजन के बिना वह मर जाएगा, भाई निष्ठुरता से **भोजन खाने बैठ गए**। उन्होंने वह भोजन भी खा लिया जो यूसुफ़ घर से अपने साथ लेकर आया था (देखें 1 शमूएल 17:17, 18)। उन्होंने लगातार कुएँ से गूँजती आ रही उसकी दया के लिए चीखों को अनसुना कर दिया (देखें 42:21)।

जब वे भोजन खा रहे थे, भाइयों ने अपनी **आँखें उठाई** और देखा **इश्माएलियों का एक दल ऊंटों पर सुगन्धद्रव्य, बलसान, और गन्धरस लादे हुए, गिलाद, यरदन के पूर्व दिशा की ओर से मिस्र को चला जा रहा है**। राल मसाले जिनका यहाँ वर्णन किया गया है प्राचीन जगत में इनकी बहुत मांग थी; परन्तु इनके नाम बड़े दुर्लभ हैं और प्रत्येक पौधे की स्पष्ट पहचान अनिश्चित है। कुछ मसाले अरब के पार काफिलों के द्वारा पूर्व से लाए जाते थे, जबकि अन्य मसाले यरदन के पूर्व दिशा गिलाद में पौधों और झाड़ियों से उत्पन्न होते थे (43:11; यहेज. 27:17)। मसालों का मूल्य उनकी महक पर आधारित होता था, परन्तु इन में से कुछ दवाइयों में प्रयोग किए जाते थे।[11]

गिलाद से व्यापार का एक मार्ग दोतान के नज़दीक कनान में से होकर तटवर्ती मैदान में जाता था; फिर यह दक्षिण में महासागर के साथ मिस्र जाता था।[12] यह काफिला "इश्माएलियों" का था जो मिद्यानी कहलाते थे (37:27, 28, 36; 39:1)। इस के लिए कई तरह से व्याख्या की गई है। (1) "इश्माएली" इन खानाबदोश व्यापारियों के दल को एक आम नाम दिया गया होगा, जबकि "मिद्यानी" एक संजातीय शब्द था जो उनके मूल जनजाति को प्रकट करता था।[13] (2) "इश्माएली" जनजातियों के एक संघ लिए एक शब्द हो सकता है जिसका मिद्यानी एक समूह थे।[14] (3) इन शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया गया है इश्माएल (अब्राहम और हाजिरा से; 16:3, 4, 15) की मिद्यान की संतान के साथ अंतरजातीय विवाह से वंश के कारण (अब्राहम और कतूरा से; 25:1, 2)।

तीसरी सम्भावना अधिक तर्कसंगत दिखाई देती है क्योंकि न्यायियों 8:24 कुछ मिद्यानियों का वर्णन करता है जिनके सोने की बालियाँ थीं "क्योंकि वे इश्माएली थे।" इसलिए जब लेखक इन व्यापारियों को "इश्माएली" और "मिद्यानी" के रूप में वर्णन करता है, वह मात्र वैकल्पिक पदनाम प्रयोग कर रहा है जो कि एक ही समूह का उल्लेख करता है।[15]

आयत 26. रूबेन की 37:21, 22 में यूसुफ़ को कुएँ में डालने की योजना स्पष्ट रूप से उसे भाइयों के हाथ से घात होने से बचाना था। उसके बाद वह सम्भवतः भेड़-बकरियों के झुण्ड को देखने के लिए चला गया। बड़े पुत्र के रूप में, पशुओं को सम्भालने की और यूसुफ़ की भी उसकी ज़िम्मेदारी थी। जब रूबेन वहाँ नहीं था, **यहूदा** ने भी अपने छोटे भाई को घात करने से मन बदल लिया; परन्तु उसकी नियत रूबेन के समान नेक नहीं थी।

यहूदा की पहली चिंता निर्दोष का **लहू** बहाने और फिर उसे **छिपाने** के के विषय में थी। उसने हो सकता है कि सुना हो धरती पर बिखरा हुआ लहू बदले के लिए पुकारता है जो उसे ढकने का प्रयास करता है (4:10, 11)। भले ही उसने कैन के द्वारा हाबिल की हत्या के विषय में सुना नहीं होगा, परन्तु उसने इससे मिलती जुलती कहानी को सुना होगा जिससे वह यूसुफ़ का घात करने के लिए डर गया।

घात करने के विषय यहूदा की दूसरी आपत्ति यह थी कि यह हत्या का व्यर्थ

है, जबकि इसको धन की लाभ प्राप्ति में बदला जा सकता है। उसने कहा, **अपने भाई को घात करने और उसका खून छिपाने से क्या लाभ होगा?** इब्रानी भाषा में "लाभ" के लिए בֶּצַע *(बेत्सा)* शब्द है जो ऐसे लाभ को बताता है जो लोभ, कपट और हिंसा से जुड़ा हुआ है।[16]

आयत 27. यूसुफ़ को घात करने की बजाय यहूदा ने सुझाव दिया, **आओ, हम इसे इश्माएलियों के हाथ बेच डालें, और अपना हाथ उस पर न उठाएं, क्योंकि वह हमारा भाई और हमारी हड्डी और मांस है।** भाइयों ने यहूदा के कथन के व्यंग्य को अनदेखा कर दिया जैसा उसने अपहरण और यूसुफ़ को घात करने की बजाय दास के रूप में बेचने के लिए तार्किक आधार पर उचित ठहराया।[17] उसने बताया कि दूसरी योजना कम गम्भीर होगी और उनके विवेक के लिए सरल होगी क्योंकि यूसुफ़ उन्हीं की "हड्डी और मांस" था। उदासीन और मतलबी तरीके से, उसने सलाह दी कि वे अपने भाई को उस तत्काल मृत्यु से बचा लेते हैं और उसे दासत्व की मृत्यु से बदतर जीवन के लिए बेचकर लाभ कमाते हैं। **उसके भाइयों ने उसकी सुनी** अर्थात वे उसकी योजना पर सहमत हो गए।

आयत 28. जब कुछ **मिद्यानी व्यापारी वहाँ से जा रहे थे**, यूसुफ़ के भाइयों ने उसे उस कुएँ से बाहर निकाला और उसे इश्माएलियों के हाथ चाँदी के 20 टुकड़ों में बेच दिया। प्राचीन मध्य पूर्व में दास को खरीदने और बेचने की आम प्रथा थी (यहेज. 27:13; योएल 3:4-8; आमोस 1:6, 9)। यूसुफ़ को बेचने की, भाइयों ने जो कीमत प्राप्त की वह उस समय के पुरुष दास के मूल्य के बराबर थी[18] और यह नियम के अधीन थी (लैव्य. 27:5)।

कोई व्यक्ति यूसुफ़ के आँसुओं और अपने भाइयों से दास रूप में उसे न बेचने की विनती की बस कल्पना ही कर सकता है (देखें 42:21), परन्तु अब तो बहुत देर हो चुकी थी। अब वह अपने सौतेले भाई का विशेष व्यवहार और दिखावटी सपनों को और सहन नहीं कर सकते थे। व्यापारी इस पारिवारिक दुःखद घटना के प्रति कठोर थे। उन्होंने अपनी खरीददारी पूरी की और यूसुफ़ को अपने साथ **मिस्र** ले गए।

भाइयों द्वारा याकूब को धोखा (37:29-36)

[29]और रूबेन ने गड्हे पर लौटकर क्या देखा, कि यूसुफ़ गड्हे में नहीं हैं; सो उसने अपने वस्त्र फाड़े। [30]और अपने भाइयों के पास लौटकर कहने लगा, कि लड़का तो नहीं हैं; अब मैं किधर जाऊं? [31]और तब उन्होंने यूसुफ़ का अंगरखा लिया, और एक बकरे को मार के उसके लोहू में उसे डुबा दिया। [32]और उन्होंने उस रंग बिरंगे अंगरखे को अपने पिता के पास भेज कर कहला दिया; कि यह हम को मिला है, सो देखकर पहिचान ले, कि यह तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं। [33]उसने उसको पहिचान लिया, और कहा, हां यह मेरे ही पुत्र का अंगरखा है; किसी दुष्ट पशु ने उसको खा लिया है; नि:सन्देह यूसुफ़ फाड़ डाला गया है। [34]तब याकूब ने अपने वस्त्र फाड़े और कमर में टाट लपेटा, और अपने पुत्र के लिये बहुत

दिनों तक विलाप करता रहा। 35और उसके सब बेटे-बेटियों ने उसको शान्ति देने का यत्न किया; पर उसको शान्ति न मिली; और वह यही कहता रहा, मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक में उतर जाऊंगा। इस प्रकार उसका पिता उसके लिये रोता ही रहा। 36और मिद्यानियों ने यूसुफ़ को मिस्र में ले जा कर पोतीपर नाम, फ़िरौन के एक हाकिम, और जल्लादों के प्रधान, के हाथ बेच डाला।

आयत 29. रूबेन वहाँ पर नहीं था जब उसके भाइयों ने यूसुफ़ को मिद्यानियों या इश्माएलियों के हाथ बेचा दिया था; जब इन अजनबियों का दल वहाँ से गुज़रा होगा तब वह जानवरों को देख रहा होगा। व्यापारियों के दल के जाने के बाद, वह **उस गड्ढे के पास लौट आया**, इस आशा के साथ कि वह अपने भाई को पाएगा और उसे बाहर निकालेगा (37:22); परन्तु **यूसुफ़ गड्ढे में नहीं था**। व्याकुल और दुःख से त्रस्त हो कर **उसने अपने वस्त्र फाड़े**। यह एक पारम्परिक अभिव्यक्ति थी जब कोई अपने परिवार या नज़दीकी सम्बन्धी की मृत्यु या उन पर आई कोई विपत्ति के विषय में सुनता था (देखें लैव्य. 10:6; 1 शमूएल 4:12; 2 शमूएल 1:2, 11; 3:31; 13:31; अय्यूब 1:20)।

आयत 30. रूबेन **अपने भाइयों के पास आया** और बताया कि **लड़का** वहाँ नहीं है। शब्द "लड़का" יֶלֶד *(येलेद)* इससे बेहतर अनुवादित है "बच्चा" (NKJV) क्योंकि यूसुफ़ उस समय 17 वर्ष का था।[19] भले ही यूसुफ़ इतनी आयु में था कि वह स्वयं सामान्य स्थितियों में अपनी सम्भाल कर सकता था, रूबेन जानता था कि अपने छोटे भाई की सुरक्षा में विफलता का उस पर आरोप आएगा। इसलिए उसने कहा, **अब मैं किधर जाऊँ?** अन्य शब्दों में वह सोच रहा था, "मैं कैसे घर में जा सकता हूँ और अपने पिता को उसका प्रिय पुत्र वापिस किए बिना मैं उसका सामना कर सकता हूँ?"

आयतें 31, 32. भाइयों ने अपने पिता को प्रस्तुत करने के लिए एक ऐसे दृश्य को तैयार किया जिस पर विश्वास किया जा सके। पहले **उन्होंने यूसुफ़ के अंगरखे को लिया**, उन्होंने **एक बकरे को मारा** और उस कीमती वस्त्र को उस जानवर के **लहू में डुबा दिया**। तब निष्ठुरता से उसे **अपने पिता के पास ले गए**, यह दावा किया कि उन्हें **यह मिला है**। इसके बजाय कि वे अपने पिता से अपने भाई के वस्त्र के होने की सम्भावना को बताते, याकूब के पुत्रों ने उससे विनती की, **सो देखकर पहिचान ले, कि यह तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं**। यह कथन यूसुफ़ के प्रति उनकी पूर्ण अवमानना और ईर्ष्या को प्रकट करता है (देखें लूका 15:30)।

इस घटना में एक दुःखद समरूप को देखा गया है। बहुत वर्ष पहले, याकूब और उसकी माता ने उसके वृद्ध पिता को धोखा देने के लिए दो बकरों को मारा था: रिबका ने इसहाक के लिए बकरे का स्वादिष्ट भोजन तैयार किया, और उसने उन बकरों की खाल को याकूब की बाज़ुओं और गले पर लगाया ताकि उसे रोएंदार महसूस हो (27:9, 16)। फिर, याकूब ने इसहाक को उसके पुत्र एसाव

के मनपसंद वस्त्र पहनने के द्वारा धोखा दिया (27:15, 27)। अब वृद्ध कुलपति याकूब के साथ उसके अपने ही पुत्रों के द्वारा धोखा किया गया, जिन्होंने बकरे के लहू और उसके प्रिय पुत्र यूसुफ़ के मनपसंद वस्त्र का प्रयोग किया (देखें 37:3)।

आयतें 33, 34. जैसे ही **याकूब** ने रक्तरंजित वस्त्र को पहचाना, उसने कहा, **हां यह मेरे ही पुत्र का अंगरखा है; किसी दुष्ट पशु ने उसको खा लिया है; निःसन्देह यूसुफ़ फाड़ डाला गया है।** याकूब ने निष्कर्ष निकाला कि यूसुफ़ मर गया है और उसने अपने प्रिय की मृत्यु पर शोक दशा कार्य के रूप में **अपने वस्त्र फाड़े** (देखें 37:29)। इसके अतिरिक्त, उसने **अपनी कमर में टाट लपेटा**, ऊँट के बालों से बना हुआ खुरदरा कपड़ा जो अपनी मानसिक पीड़ा को शारीरिक पीड़ा के साथ प्रकट करने के लिए विलाप करते हुए कमर में पहनते हैं (2 राजा 6:30; 19:1; नहेम्य. 9:1; एस्तेर 4:1; यशा. 37:1; यिर्म. 4:8; 6:26)। इस तरह से, याकूब ने **अपने पुत्र के लिए बहुत दिनों तक विलाप किया**।

आयत 35. चाहे **उसके सभी पुत्र और पुत्रियाँ उसे सांत्वना देने के लिए आए, याकूब ने उनकी सांत्वना को स्वीकार करने से इनकार कर दिया**। क्योंकि दीना उसकी एक ही पुत्री है जिसका बाइबल अंश उल्लेख करता है, इस उल्लेख में सम्भवतः उसकी बहुओं को जोड़ा गया है। रूत 1:11, 13 में नाओमी ने रूत और ओर्पा को अपनी "पुत्रियाँ" कहा भले ही वे उसकी बहुएँ थीं।

कुलपति का लम्बे समय तक विलाप करना और सांत्वना से उसका इनकार किया जाना भाइयों ने इस की आशा नहीं की थी। उन्होंने यूसुफ़ को दूर तो कर दिया परन्तु वे उसके लिए पिता के प्रेम को नष्ट नहीं कर सके। याकूब की मानसिक स्थिति शेष परिवार के लिए गम्भीर चिन्ता बन गई थी; फिर भी उसके पुत्रों का उसे झूठी सांत्वना देना एक पाखण्ड ही था। उसके प्रिय पुत्र यूसुफ़ के साथ घृणा होने के कारण वे अपने पिता पर इस मानसिक पीड़ा को लाए।

अन्त में, याकूब ने उनकी विनतियों का प्रत्युत्तर दिया परन्तु अपने परिवार के लिए आशावादी शब्दों के साथ नहीं। इसके बजाय उसकी टिप्पणियों ने मात्र निराशाजनक भविष्य, सांसारिक आनन्द की विहीनता को ही दर्शायाः **मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक[20] में उतर जाऊंगा।**

आयत 36. याकूब यूसुफ़ के लिए लगातार विलाप करता रहा, मिद्यानियों ने उसे मिस्र में ले जाकर पोतीपर नाम, फ़िरौन के एक हाकिम और जल्लादों के प्रधान के हाथ बेच दिया (39:1 की टिप्पणियों को देखें)।

अनुप्रयोग

पारिवारिक जीवन में गम्भीर समस्याओं के स्रोत (अध्याय 37)

मिस्र देश में बेचे गए यूसुफ़ की कहानी व्यवहार और क्रियाओं के ऐसे बहुत से उदाहरणों को दर्शाती है जो परिवार को कलह की ओर ले जाते हैं। आइए हम परिवार की समस्याओं के कुछ स्रोतों पर विचार करें और उन्हें रोकने का भरसक प्रयास करें।

अनुपयुक्त पक्षपात। याकूब का पक्षपात भेदभाव का एक बुरा रूप था। इसहाक और रिबका के छोटे पुत्र के रूप में, याकूब माँ की प्रीतिपात्र में बड़ा हुआ जबकि उसके पिता को एसाव प्रिय था। रिबका के प्रोत्साहन और सहायता से याकूब ने झूठ और धोखे से अपने पिता से मृत्यु शैय्या की आशीष को ले लिया जो वास्तव में एसाव के लिए थी। इससे दो भाइयों में मनमुटाव हो गया और एसाव ने याकूब को मारना चाहा। दोनों भाइयों के मेल-मिलाप से पहले 20 वर्ष का समय बीत गया; याकूब ने बिखरे हुए परिवार में अपने अनुभव से कुछ नहीं सीखा। उसने अपने परिवार में उसी तरह के अनैतिक वातावरण को बनाए रखा, जो कि उसकी चार पत्नियों के बीच कलह और डाह का कारण बना। राहेल के लिए प्रत्यक्ष पसंद का प्रदर्शन करने से उसने लिआ के साथ भेदभाव किया और उसे महसूस करवाया कि वह अप्रिय है। उसी तरह से ईर्ष्या और क्रोध इन चारों स्त्रियों के पुत्रों में विद्यमान था - विशेषकर राहेल के पुत्र यूसुफ़ और याकूब की अन्य तीन पत्नियों के पुत्रों के बीच।[21]

याकूब इस बात को समझने में असमर्थ था कि परिवार में पक्षपात कितना विनाशकारी हो सकता है। उसने यूसुफ़ को विशेष उपहार या अधिकार देने से पहले सोचा तो होगा परन्तु विचार अक्सर भावनाओं में बह जाते हैं। याकूब का यूसुफ़ के लिए पक्षपात करना दिल का मामला था (राहेल के प्रति प्रेम) बजाय मन का तर्कसंगत निर्णय। युवा बच्चों के परिवार को चलाने के लिए याकूब की कार्यशैली एक अच्छा तरीका नहीं था और उसने भाइयों के बीच विरोध को कम करने के लिए कुछ नहीं किया।

याकूब के पक्षपात का उदाहरण यूसुफ़ को उपहार में दिए गए विशेष अंगरखे से देखा जा सकता है जिसने उसको अन्य भाइयों से अलग कर दिया था। यह एक ऐसा वस्त्र था जो धनी लोगों के द्वारा पहना जाता था, ऐसा वस्त्र नहीं था जो भेड़ बकरियाँ चराते हुए कोई चरवाहा पहनेगा और उसके बड़े भाई इस के कारण उसे घृणा करते थे (37:3, 4)। इस वस्त्र ने याकूब के निर्णय का संकेत कर दिया कि उसकी विरासत का दुगना भाग यूसुफ़ को मिलेगा बजाय रूबेन को जो पहलौठा है जिसने बिल्हा, याकूब की पत्नियों में से एक पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाए थे (35:22)। यद्यपि याकूब के दूसरे और तीसरे नम्बर के पुत्र शिमौन और लेवी ने शकेम के पुरुषों की हत्या कर दी थी (34:25, 26), फिर भी सम्भव है कि उनके पिता ने यह निर्धारित कर रखा हो कि पहलौठे का अधिकार और आशीष उनमें से किसी को नहीं मिले। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, बड़े भाइयों ने यह समझ लिया कि याकूब किसी न किसी दिन अपनी विरासत का दुगना भाग यूसुफ़ को देगा।[22] इस तरह के विचार ने निश्चय ही उनकी उसके प्रति ईर्ष्या और शत्रुता पर आग में घी का काम किया होगा।

जवानी का घमंड। ऐसा हो सकता है कि यूसुफ़ अपने कार्यों के प्रति भोला और मासूम था, परन्तु इस बाइबल अंश की एक अन्य व्याख्या है कि वह जवानी के घमंड से भरा हुआ था। इस दृष्टिकोण के अनुसार, उसने अपने पिता की पक्षपात की भूमिका का आनन्द उठाया और चुगलखोर बन गया, अपने भाइयों

की "बुराइयों का समाचार" उसे बताता था (37:2)। अपने भाइयों का नाम खराब करने के द्वारा उसने अपनी प्रतिष्ठा बनाने का प्रयास किया होगा।

घमंड अक्सर "विनाश" और "ठोकर" को लाता है (नीति. 16:18)। यीशु ने इसको बुरे विचारों की सूची में रखा जो मनुष्य के हृदय से बाहर आते हैं (मरकुस 7:21, 22; देखें 1 यूहन्ना 2:16)। पौलुस ने सावधान किया कि एक व्यक्ति जो "अभिमानी" (घमंडी) है "शैतान का सा दण्ड पा गया है" (1 तीमु. 3:6)। यूसुफ़ को अंगरखा मिला वह उसे घमंड से पहनता था। हो सकता है कि उसको अपना अनोखा वस्त्र पहनकर इधर-उधर अकड़कर चलना अच्छा लगता हो ताकि सभी उसे एक विशेष व्यक्ति के रूप में पहचान लें। उसने इसे खेतों में भी पहना हुआ था जहाँ उसके भाई अपनी भेड़ बकरियाँ चराते थे। उसने शकेम और दोतान की लगभग 60 मील यात्रा पर जाते हुए उस अंगरखे को पहनने का गलत निर्णय लिया (37:14-17)। जब उसके भाइयों ने उसे दूर से देखा, इसने उनके अन्दर घोर मानसिक पीड़ा को उत्पन्न कर दिया।

यूसुफ़ के आरम्भिक कार्यों ने पहले ही से उसे अपने भाइयों से दूर कर दिया था। अपने सपनों को बताने में, उसने अपने विषय विचार करने के लिए कुछ नहीं रखा था। उसे अपने भाइयों को तंग करने में आनन्द मिलता था। उसके सपनों में अचूक शर्तों का आम संदेश थाः भले ही वह उनका छोटा भाई था, वह वास्तव में ही उनसे श्रेष्ठ था; और एक दिन उनको उसके सामने स्वयं को झुकाना था। पहले सपने में, यूसुफ़ और उसके भाई खेत में पूले बांध रहे थे और यूसुफ़ का "पूला उठ गया" और "सीधा खड़ा हो गया," जबकि उसके भाइयों के पूले "चारों ओर एकत्र हुए और उसके सामने झुक गए" (37:7)। यह, निस्संदेह, राजा के सामने अधीन होने की उपयुक्त मुद्रा थी, और इस विचार ने भाइयों के क्रोध को भड़का दिया। उन्होंने कहा, "क्या तू सच में हम पर प्रभुता करने जा रहा है" (37:8)?

तब यूसुफ़ को एक अन्य सपना आया, जिसने उसके भाइयों को और भी क्रोधित कर दिया। उसने कहा कि "सूर्य और चन्द्रमा और 11 सितारे उसके सामने झुक रहे हैं।" इस समय उसने अपने पिता को भी शामिल कर लिया, उनकी तरह वह भी परेशान हो गया था और पूछा, "क्या मैं और तुम्हारी माता और तेरे भाई सचमुच तेरे सामने धरती पर झुकेंगे?" (37:9, 10)। सम्भवतः अपने भाइयों के प्रति यूसुफ़ के अभिमानी रवैये ने परिवार की उस स्थिति को और अधिक भड़का दिया जो पहले से ही विस्फोटक बनी हुई थी।

अनियंत्रित घृणा। भाइयों ने यूसुफ़ पर दया नहीं की। वे अपने पिता के पक्षपात के कारण क्रोधित और ईर्ष्यालु थे। यीशु के अनुसार, इस तरह के व्यवहार दुष्ट हृदय से आते हैं (मरकुस 7:21, 22)। पौलुस ने उन्हें "शरीर के कामों" के रूप में वर्गीकृत किया है (गला. 5:19-21)। समय के साथ साथ, यह पाप घृणा में बदल जाते हैं जिनको हिंसा में बदलने के लिए बस एक अवसर ही चाहिए। जब भाई अपने घर से दूर दोतान के आस-पास के क्षेत्र में थे और यूसुफ़ दूर से अपनी ओर आता हुआ उनको दिखाई दिया, तो वह उसे घात करने की

साजिश रचने लगे। वह एक दूसरे को तिरस्कारपूर्ण शब्दों में कहने लगे, "वह स्वप्न देखनेहारा आ रहा है।" (37:19)। भाइयों ने यह निर्णय लिया कि वे उसे "घात करके" और उसकी देह को गड़हे में "फेंककर" अपने पिता को बता देंगे कि "कोई जंगली पशु उसे फाड़कर खा गया।" उपहास में उन्होंने कहा, "फिर हम देखेंगे कि उसके स्वप्नों का क्या फल होगा।" (37:20)।

भले ही 9 भाई यूसुफ़ को घात करना चाहते थे, रूबेन, सबसे बड़ा भाई, उनकी इस साज़िश से सहमत नहीं था क्योंकि वह जानता था कि याकूब उसे इसका उत्तरदायी ठहराएगा। इसलिए उसने वाद विवाद किया कि उसके भाइयों को अपने छोटे भाई की हत्या नहीं करनी चाहिए, परन्तु उसे उस सूखे कुएँ में जीवित फेंक देना चाहिए। रूबेन की योजना थी कि वह वापिस आकर उसे वहाँ से निकाल लेगा और उसे सुरक्षित घर पहुँचा देगा। यदि यूसुफ़ वापिस घर आ जाता और अपने पिता को बताता कि उसके भाइयों ने उसे मारने का प्रयास किया था, इसके परिणामस्वरूप परिवार नाश हो गया होता। यूसुफ़ कभी भी मिस्र देश न जाता और याकूब और उसके परिवार का वहाँ जाने का कोई कारण न होता। तब चार सौ वर्षों के बाद, मिस्र देश में मूसा के द्वारा गुलामी से छुड़ाने के लिए कोई भी इस्राएली न होता। हम परमेश्वर की पूर्वदृष्टि पर आश्चर्य कर सकते हैं, जो बुराई और भलाई दोनों ही को अपने लोगों और सारे संसार की भलाई के लिए प्रयोग करने में सक्षम है (रोमियों 8:28)।

भाइयों ने रूबेन के सुझाव को मान लिया और यूसुफ़ को गहरे गड़हे में फेंक दिया। तब, निष्ठुरता से अपने भाई की बाहर निकालने के लिए चिल्लाहट को अनदेखी करते हुए "वे ज़मीन पर बैठ गए" और "भोजन खाने लगे" (37:24, 25)। वर्षों बाद मिस्र देश में, यह कार्य अभी भी उनके विवेक को परेशान करेगा और यूसुफ़ की दया के लिए चिल्लाहट को अनदेखा करने के अपराध को स्वीकार करवाएगा; परन्तु, उस समय दोतान में, वे अपने छोटे भाई से पीछा छुड़ाना चाहते थे। उनके कार्य घृणा के पाप की भयानक प्रकृति को प्रकट करते हैं: यह झूठ, धोखा और "कलह को बढ़ाता है परन्तु प्रेम सब अपराधों को ढकता है" (नीति. 10:12)। पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने क्रोध के विरुद्ध चेतावनी दी थी, क्योंकि घृणा जो हत्या की ओर ले जाती है यह हृदय से उत्पन्न होती है (मत्ती 5:21, 22)। कैन के द्वारा हाबिल की हत्या का बाइबल आधारित उदाहरण है (4:5-8): "कैन ... जो उस दुष्ट से था, और जिस ने अपने भाई को घात किया और उसे किस कारण घात किया? इस कारण कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धर्म के थे" (1 यूहन्ना 3:12)।

कहानीकार के विवरण के अनुसार, जब उसके भाइयों ने उसे व्यापारियों के हाथ बेचा, जो उसे मिस्र ले गए, उस समय रूबेन वहाँ नहीं था। उसकी सहानुभूति यूसुफ़ के साथ थी, परन्तु वह उसे बचा न पाया। वह जानता था कि उसका पिता नाश हो जाएगा और वह उसे दोषी ठहराएगा; इसलिए उसने विलाप करते हुए अपने वस्त्र फाड़े जैसे किसी मृतक के लिए शोक करते हैं। वास्तव में, भाइयों ने मिस्र देश में यूसुफ़ को मौत से बदतर जीवन जीने के लिए

बेच दिया, क्या यह परमेश्वर की पूर्वदृष्टि में नहीं था जिसके मन में यूसुफ़ के लिए एक बेहतर स्थान था।

कपटी चाल। तब भाइयों ने अपनी कारगुज़ारी को छिपाने के लिए एक कपटी चाल चली। उन्होंने एक बकरे को मारा और उसके लहू को यूसुफ़ के अंगरखे पर लगा दिया। जब वे अपने जानवरों के साथ वापिस घर आए, उन्होंने ने रक्तरंजित अंगरखा अपने पिता को दिखाया। याकूब दुःखी हो गया था, यह सोचते हुए कि किसी जंगली जानवर के द्वारा यूसुफ़ फाड़ डाला गया है। याकूब ने जो बोआ था वही काट रहा था (गला. 6:7, 8)। बहुत दिन पहले, उसने दो बकरों को काटा था और अपने दृष्टिहीन पिता को धोखा देने के लिए बकरों की खाल को अपने बाज़ुओं और गले पर लगाने के लिए उनका प्रयोग किया था और उसने एसाव के वस्त्र पहने थे इसहाक से मृत्यु शैय्या की आशीष पाने के लिए (27:9-16, 27-29)। बकरे को मारने और उसका लहू यूसुफ़ के वस्त्र पर लगाने के द्वारा उसके पुत्र भी उसी के पदचिन्हों पर चले। उनके कार्य के कारण याकूब अपने प्रिय पुत्र के लिए आँसू बहाने पड़े, जिसको उसने मरा हुआ समझ लिया। परिवार के द्वारा सांत्वना देने के प्रयास के बावजूद भी उसने लम्बे समय तक विलाप किया। वास्तव में, बाइबल अंश प्रकट करता है कि वह बीस वर्ष बीत जाने के बाद भी यूसुफ़ की मृत्यु पर विलाप कर रहा था (42:36)।

निष्कर्ष। याकूब के आनन्द का खोया जाना चित्रित करता है कि ज्यों ज्यों हम पाप, दुःख और मृत्यु के संसार में रहते हैं हमें विश्वास की ज़रूरत है। जब हम नौकरी, हमारा स्वास्थ्य या किसी प्रिय जन को खो देते हैं तो भविष्य हमें आशाहीन दिखाई देने लगता है; इसलिए हमें "देखकर नहीं विश्वास से चलना" चाहिए (2 कुरि. 5:7)। मात्र विश्वास ही हमें अन्धकार के काले बादलों में सिर उठाने देता है जो हमारे आस-पास उठ खड़े होते हैं, इस तरह हमने जो नहीं देखा और परमेश्वर का जो उद्देश्य हमारे जीवन में पूरा नहीं हुआ उसकी कल्पना कर सकते हैं (देखें इब्रा. 11:1, 7)। याकूब को यह सीखना था कि बेतेल का परमेश्वर, जो उस पर "सर्वशक्तिमान" के रूप में स्वयं प्रकट हुआ था (35:11) उसने उसे नहीं छोड़ा था। यूसुफ़ के सपनों को पूरा करने के लिए वह अभी विश्वासयोग्य था (37:5-11)। "सारे जगत के कुलों को आशीष" देने के लिए वे सपने अनोखे ढंग से साकार होंगे (28:14)।

समाप्ति नोट्स

[1]देखें केन्नेथ ए. किचन, "जोज़ेफ," में *दि इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडीया,* रिवाइज्ड एडीशन, संपादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रामिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 2:1128. [2]*डिबल्लाह,* विशेषण *रा* के बिना गिनती 13:32; 14:36 में प्रयोग किया गया है। [3]फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राइवर और चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू इंगलिश लेक्सीकन आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट* (आक्सफॉर्डः क्लैरडन प्रेस, 1962), 179. [4]बेनी हसन कब्र चित्रकारी (ई. पू. उन्नीस सदी) में शामी लोगों के झुंड जो मिस्र को जा रहा था, में इन लोगों को लंबे, रंगीन वस्त्र पहने चित्रित किया गया है; परंतु स्त्री तथा पुरूष दोनों के वस्त्र बाज़ू रहित थे।

इसमें पुरुष दासों के वस्त्र में अपवाद है जिनका धड़ पूरी तरह वस्त्र विहीन था। हाँ, यह हो सकता है कि इन्होंने गर्मियों में अपनी यात्रा प्रारंभ की होगी जो मिस्र के अत्यधिक गर्म क्षेत्र की ओर कूच कर रहे थे। चूँकि इस्राएल के मध्य के पहाड़ी क्षेत्रों (प्राचीन कनान) में कभी कभी बर्फ बारी होती थी, तो लोग निस्संदेह हस्त तक ढके वस्त्र पहनते होंगे। (जेम्स बी. प्रिचार्ड, *दि एनसिएंट नीयर ईस्ट इन पिक्चर्स रिलेटिंग टू दि ओल्ड टेस्टामेंट*, 2nd प्रकाशन [प्रिंसटन, न्यू जर्सीः प्रिंसटन यूनीवर्सिटी प्रेस, 1969], 2-3 [no. 3]।) [5]जॉन एच. वाल्टन, विक्टर एच. मैथ्यूस और मार्क डब्ल्यु. चावाल्स, *दि IVP बाइबल बैकग्रांउड कमेंट्रीः ओल्ड टेस्टामेंट* (डॉनर्स ग्रूव, इलीनॉइसः इंटर-वार्सिटी प्रेस, 2000), 69. [6]*तारगूम नियोफिति 1: जेनेसिस*, अनुवादक एम. मेक्कामारा, दि अरामिक बाइबल, वोल्यूम 1A (कॉलेज विलः लिटर्जीकल प्रेस, 1992) और *तारगूम आफ सुडो-जोनाथन*, अनुवादक माइकल माहेर (कॉलेज विलः लिटर्जीकल प्रेस, 1992)। [7]विलियम जी. देवेर, "दोतान," में *दी एंकर बाइबल डिक्शनरी*, संपादक डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्कः डबलडे, 1992), 2:226-27; और जोज़ेफ पी. फ्री, "दोतान," *इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडिया*, रिवाइज्ड एडीशन, ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रामिली (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 1:985-86. [8]जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस*, द लिविंग वर्ड कमेंट्री (आस्टीन, टेक्सासः स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 387, देखें। [9]इब्रानी शब्द מִדְבָּר *(मीदबार)* दोतान घाटी के भौगोलिक संदर्भ में "चरागाह भूमि" अनुवाद बेहतर है। (देखें लुडविग कोहेल्र और वाल्टर बामगार्टपर, *दि हिब्रियु एण्ड एरामिक लैक्सीकोन ऑफ दि ओल्ड टैस्टामेंट*, स्टडी इडी., ट्रांस. और इडी. एम. ई. जे. रिचर्डसन [बोस्टानः ब्रिल, 2001], 1:546-47.) [10]यिर्मयाह यरूशलेम में इसी तरह के कुएँ में डाला गया था जिसमें पानी नहीं था, और वह कीचड़ में धंस गया था; परन्तु कूशी खोजे के हस्तक्षेप ने उसके जीवन को बचाया (यिर्म. 38:1-13)।

[11]रिचर्ड एन. जोनस, "बाल्म," *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी* में, 1:573-74. [12]बेत-शीन से यरदन नदी पार करने और पश्चिम इस्राएल की ओर यात्रा करने के बाद, दल या तो मगिद्दो की ओर यात्रा कर सकता था या दक्षिण पश्चिम दोतान की ओर यात्रा कर सकता था। दोनों ही रास्ते अन्त में तटीय राजमार्ग से जाकर जुड़ते थे जो मिस्र जाता था। देखें योहनान एहरोनी और माइकल अवी-योनाह, *दि मैकमिल्लान बाइबल एटलस*, 3डी एड. (न्यू यार्कः मैकमिल्लन पबलिशिंग कम्पनी, 1993), 17 (मानचित्र 10)। [13]विक्टर पी. हैमिल्टन, *दि बुक ऑफ जेनेसिसः चैपटर 18-50,* दि न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन ओल्ड टैस्टामेंट (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन.: डब्लयूएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1995), 423. [14]गॉर्डन जे. वेनहेम, *जेनेसिस 16-50,* वर्ड बिबिलिकल कमैंट्री, वाल. 2 (डलासः वर्ड बुक्स, 1994), 354-55. [15]ब्रूस के. वाल्कटे, *जेनेसिसः ऐ कमैंट्री* (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगनः जोंडरवेन पबलिशर्स, 2001), 503. [16]ब्राऊन, ड्राइवर, और ब्रिग्गस, 130. [17]मूसा की व्यवस्था में अपहरण एक संगीन अपराध था (निगर्मन 21:16; व्यव. 24:7)। कुलपति के समय दौरान बाबुल में भी यही नियम था। (*दि कोड ऑफ हम्मुरबी* 14.) [18]के. ऐ. किचन, *ऑन दि रिलायबलिटी ऑफ दि ओल्ड टैस्टामेंट* (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगनः डब्लयूएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 2003), 344. [19]शब्द *येलेद* को इश्माएल युवा के रूप में भी प्रयोग किया गया था (21:14), जब वह यूसुफ़ के समान संदर्भ में इसी आयु में था। [20]"अधोलोक" שְׁאוֹל *(शीओल)* यह मृतकों के रहने का इब्रानी नाम है (42:38; 44:29, 31; 1 राजा 2:6, 9)।

[21]राहेल की बिन्यामीन को जन्म देते हुए मृत्यु हो गई थी, और छोटा बच्चा था जब यूसुफ़ 17 वर्ष का था। हम नहीं जानते कि क्या इन दस भाइयों ने उस छोटे भाई से बैर रखा था। यह प्रकट होता है कि उनका क्रोध यूसुफ़ पर ही केन्द्रित था। [22]याकूब ने इसकी घोषणा नहीं की थी जब तक वह मिस्र में मृत्यु के दिन के पास नहीं पहुँचा था और यूसुफ़ फ़िरौन का प्रधान मंत्री था (48:21, 22; 49:22-26; 1 इतिहास 5:1, 2)।